अच्छा वक्त उसी का होता है जो किसी का बुरा नहीं सोचते।
– अज्ञात

विचार-प्रवाह
देहरादून शुक्रवार 31 जनवरी 2020
पेज थ्री
www.page3news.in

स्थिर विपक्ष की जरूरत

यह भी कि राहुल गांधी में यह क्षमता नहीं है कि वह ऐसे विपक्ष का नेतृत्व कर सकें। इस संबंध में उन्होंने आगे कहा कि युवा भारत पांचवीं पीढ़ी का वंशवाद नहीं चाहता। अपोजिशन को लेकर और भी कई लोग समय-समय पर सवाल उठाते रहे हैं।

नूपर तिवारी।

देश के जाने–माने बुद्धिजीवी इस बात से चिंतित हैं कि भारत में विपक्ष बहुत कमजोर हो गया है। नोबेल पुरस्कार से सम्मानित भारतीय मूल के अर्थशास्त्री अभिजीत बनर्जी ने जयपुर लिटरेचर फेस्टिवल में कहा कि विपक्षी राजनीतिक दल एकजुट नहीं हैं, जिस कारण वे सरकार पर दबाव बनाने में नाकाम हैं। बनर्जी ने कहा कि भारत को बेहतर विपक्ष की जरूरत है। यही बात प्रख्यात इतिहासकार रामचंद्र गुहा ने कुछ दिनों पहले कही थी।

कोझिकोड में आयोजित केरल लिटरेचर फेस्टिवल में उन्होंने कहा था कि बीजेपी से मुकाबले के लिए एक विश्वसनीय और स्थिर विपक्ष की जरूरत है। यह भी कि राहुल गांधी में यह क्षमता नहीं है कि वह ऐसे विपक्ष का नेतृत्व कर सकें। इस संबंध में उन्होंने आगे कहा कि युवा भारत पांचवीं पीढ़ी का वंशवाद नहीं चाहता। अपोजिशन को लेकर और भी कई लोग समय–समय पर सवाल उठाते रहे हैं। दरअसल, किसी भी जनतांत्रिक व्यवस्था के लिए आदर्श स्थिति यह होती है कि समान क्षमता वाली कम से कम दो पार्टियां वहां मौजूद रहें। एक सत्ता में हो और दूसरी विपक्ष में।

भारत में आजादी के बाद लंबे समय तक कांग्रेस का वर्चस्व रहा, लेकिन विपक्ष की भी संसद से लेकर सड़क तक मुखर मौजूदगी रही। बतौर प्रधानमंत्री नेहरू ने उसे पर्याप्त महत्व दिया। फिर गैर–कांग्रेसवाद के नारे के तहत विभिन्न पार्टियों ने कांग्रेस को चुनौती दी। उन्हीं पार्टियों के बीच से जनसंघ की धारा समय के साथ मजबूत होती गई और बीजेपी के रूप में वह कांग्रेस के समानांतर खड़ी हो गई। तब गैर–कांग्रेस और गैर–बीजेपी दलों ने तीसरे मोर्चे की अवधारणा पेश की लेकिन उससे जुड़े दल देर तक एकजुट नहीं रह पाए और मौका देखकर वे कभी कांग्रेस तो कभी बीजेपी का दामन थामने लगे। बीच में लगा कि कांग्रेस और बीजेपी के गठबंधनों यूपीए और एनडीए के रूप में दो वैचारिक खेमों की सियासत अमेरिका–ब्रिटेन की तरह भारत में भी चलेगी। फिर बीजेपी ने यूपीए सरकार के कमजोर फैसलों का हवाला देते हुए मजबूत केंद्रीय सत्ता के नाम पर वोट मांगे और उसे जबर्दस्त जन समर्थन प्राप्त हुआ। उसके बाद से कई बार ऐसा लगा कि विपक्ष एकजुट होकर मोदी सरकार को चुनौती देगा लेकिन वह एकता टिकाऊ नहीं हो पाई।

कांग्रेस की मुश्किल यह है कि उसका अतीत उसके साथ चिपका हुआ है और उस पर एक परिवार का लेबल भी लगा है। इस कारण वह आक्रामक होने के बजाय प्रायरू रक्षात्मक ही दिखती है। उसका कोई नया–ताजा नेतृत्व होता तो वह अतीत को परे रख अभी के मुद्दों पर हमलावर हो सकता था। लेकिन ऐसा हो नहीं पा रहा। कांग्रेस का जमीनी ढांचा जर्जर हो चुका है। पार्टी के पास कार्यकर्ता नहीं हैं और नेताओं में जनता के बीच रहकर सघर्ष करने की कोई प्रवृत्ति नहीं है। क्षेत्रीय पार्टियां न तो अपने दायरे से निकलती हैं, न किसी को उसमें घुसने देना चाहती हैं। सरकार के सामने एकजुट राजनीतिक प्रतिपक्ष की अनुपस्थिति भारतीय लोकतंत्र के लिए कोई शुभ लक्षण नहीं है।

नशे की दावत

अशोक वोहरा।

धर्म-दर्शन

नृत्य–संगीत, हास्य मनोरंजन और शराब के मिश्रण को पार्टी कहते हैं। प्राय यह शहर की मधुशालाओं मे आयोजित होती हैं । कार्पोरेट जगत में एक परम्परा के तौर पर सालाना इसका आयोजन किया जाता है। वैसे अगर जेब मे दाम हो तो वीकेंड पर आप दाम देकर इस सुविधा का आनंद ले सकते हैं। नरेंद्र के लिए हमेशा यह एक कौतूहल की तरह रहा है कि संजीदा दिखने वाले लोग नशे के बाद छिछोरे कैसे हो जाते हैं। पार्टी की शुरुआत में हाथ में एक फीता या बैंड बाँधा जाता है। नरेंद्र ने बचपन से हाथ में यजमानों को मौली बाँधकर वरणबंधन होते देखा है। ये भी एक तरह का वर्णबंधन है। मध्यम रोशनी, तेज संगीत और हवा मे धूम्र और शराब की गंध।

संपादकीय

नया फंडा शाहीन बाग में

गांधी जी ,अम्बेडकर के चित्र संविधान की कापी दिखाते ,कभी –कभी राष्ट्रीय गान का ड्रामा सब भारत के गौरव तिरंगे की आड़ में ? स्वतंत्र भारत में आजादी आजादी के नारे ,कैसी आजादी ? शाहीन बाग में महत्व पूर्ण मार्ग को रोक कर (और भी विभिन्न शहरों में)मुस्लिम महिलायें अपने बच्चों के साथ धरने पर बैठी हैं सब एक सी बोली बोल रहीं हैं सीएए ,एनआरसी लागू होने नहीं देंगे बच्चे उनसे भी आगे हैं अभी उनकी पढ़ने खेलने की उम्र है वह ऐसे डायलाग बोलते हैं दुःख होता हैं माता पिता को समझ नहीं आ रहा किसी कट्टरपंथी संघठन की उनपर नजर पड़ गयी उनको फिदायीन बनाते देर नहीं लगेगी ,बचपन में जहर के बीज रोप जा रहे है। बार बार सरकार समझा रही हैं संविधान संशोधन कानून किसी की नागरिकता लेने की लिए नहीं है उन अभागे हिन्दू , सिख ,ईसाई , बौद्ध ,जैन एवं ईसाई गैर इस्लामिक समुदाय को नागरिकता देने के लिए संसद द्वारा पास किया गया कानून है जिन्हें अफगानिस्तान से तालिबानों ने निकाल दिया था, बंगला देश एवं पाकिस्तान में उनकी कम उम्र की बेटियाँ आये दिन उठा कर उनका धर्म परिवर्तन करा किसी मुस्लिम से निकाह पढ़वा दिए जा रहे है कभी कम उम्र की बच्ची अधेड़ को निकाह के नाम पर सौंप दी जाती है कुछ बलात्कार का शिकार होती हैं ,उनका धर्म (मन्दिर गुरूद्वारे तोड़े जा रहे हैं),घर द्वार ,सम्पत्ति ,कुछ भी सुरक्षित नहीं है कितना बड़ा संताप है उनका नामकरण काफिर है उनकी जनसंख्या रोज घट रही है पाकिस्तान में न दाद न फरियाद '। भारत के बटवारे की देन धर्म के आधार पर बना पाकिस्तान था। शरीयत के नाम पर तलाक दृऐ–बिद्दत अर्थात तीन तलाक दुखद था लेकिन मुस्लिम महिलायें बोल नहीं सकती थीं। चैनलों में होने वाली बहसों में सिर झुका कहती थीं हम शरीयत के नियमों का पालन करेंगीं।

इस रेस का ही नतीजा है कि परीक्षाओं में 80-90 फीसदी अंक लाने वाले और आईआईटी जैसे विख्यात संस्थान में पढ़ने वाले बच्चे भी उम्मीद से कम अंक पाने की तकलीफ नहीं सह पाते।

परीक्षा जिंदगी नहीं, एक पड़ाव

रिजवान अंसारी।

पिछले दिनों प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दिल्ली के तालकटोरा स्टेडियम में 'परीक्षा पर चर्चा 2020' कार्यक्रम को संबोधित किया। उन्होंने छात्रों, शिक्षकों और अभिभावकों से लगभग दो घंटे बात की। देश भर के स्कूल छात्रों ने पीएम मोदी से परीक्षा, लक्ष्य, जीवन की चुनौतियों को लेकर कई सवाल किए। इसी दौरान मोदी ने यह भी समझाने की कोशिश की कि अंक सफलता का पैमाना नहीं है। उन्होंने कहा कि परीक्षा जिंदगी नहीं, महज एक पड़ाव है।

पीएम मोदी का यह कथन समाज की उस स्थिति की ओर इशारा करता है जहां स्टूडेंट्स में नंबर लाने की रेस सी लग गई है। इस रेस का ही नतीजा है कि परीक्षाओं में 80–90 फीसदी अंक लाने वाले और आईआईटी जैसे विख्यात संस्थान में पढ़ने वाले बच्चे भी उम्मीद से कम अंक पाने की तकलीफ नहीं सह पाते और कई बार मौत तक को गले लगा लेते हैं। हाल ही में राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) द्वारा जारी डेटा विश्लेषण के अनुसार 2018 के दौरान हर 24 घंटे में औसतन 28 स्टूडेंट्स ने आत्महत्या की। 2018 की ही बात करें तो, एक साल में दस हजार से ज्यादा विद्यार्थियों ने मौत को गले लगाया और यह

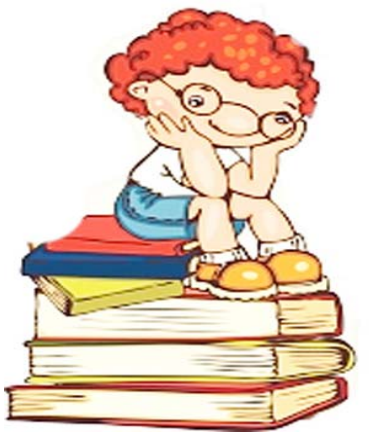

संख्या पिछले दस सालों में सबसे ज्यादा है। रिपोर्ट के अनुसार 1 जनवरी, 2009 से 31 दिसंबर, 2018 तक 81,758 छात्रों ने खुदकुशी की। इनमें 57 फीसदी छात्रों ने पिछले पांच सालों में खुदकुशी की है। इन छात्रों में अधिकतम ने परीक्षा में फेल होने या कम अंक लाने की वजह से मौत को गले लगाया है।

स्टूडेंट्स पर नंबर का यह दबाव समझना मुश्किल भी नहीं। चाहे नामी–गिरामी कॉलेजों में दाखिले की बात हो या निजी संस्थानों में नौकरियों की, अच्छे नंबरों की अहम भूमिका होती है। लेकिन, ऐसा भी नहीं कि हर जगह यही नजरिया अपनाया जाता है। गौर करने की बात है कि भारत में संघ लोक सेवा आयोग सबसे बड़ी परीक्षा आयोजित कराने के लिए जाना जाता है। राज्य स्तर पर यही काम राज्य लोक सेवा आयोग करता है। ये दोनों ही आयोग सिविल सेवा परीक्षा आयोजित कराते हैं। लेकिन सबसे प्रतिष्ठित सिविल सेवाओं के लिए होने वाली प्रतियोगिता परीक्षाओं के लिए जरूरी शर्तों में अंक फीसद का कोई जिक्र नहीं होता। चाहे किसी भी डिविजन से पास हो, जरूरी शैक्षणिक डिग्री है तो युवा उन परीक्षाओं में शामिल होने योग्य माना जाता है।

ऐसे में सवाल है कि माता–पिता या शिक्षकों द्वारा केवल प्राप्त अंक के आधार पर ही छात्रों के बारे में राय बना लेना कितना सही है। क्या उन्हें अंक की बजाय बच्चों की रचनात्मकता या उनकी क्षेत्र विशेष में दिलचस्पी को तवज्जो नहीं देनी चाहिए? मुश्किल यह है कि आज हमारे समाज में तमाम बहसें अंकों पर आकर ही खत्म होती हैं। यकीनन हमें इस तरह की रिवायत को खत्म करने की जरूरत है। इसके अलावा इस बात पर भी गौर करना जरूरी है कि हमारे बच्चों में ऐसी कौन–सी समझ विकसित हो रही है जो उन्हें फेल हो जाने पर खुदकुशी के लिए उकसाती है।

सूडोकु नवताल-5199

मध्यम

5					9	6		
						1	4	
			2	8				
			8				5	2
6								7
1	4				3			
				4	1			
	2	5						
		3	7					4

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
■ प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
■ पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -5198 का हल

3	6	5	1	8	2	7	4	9
7	9	2	3	5	4	1	8	6
4	1	8	6	7	9	5	3	2
6	5	9	2	4	8	3	7	1
8	4	7	9	3	1	6	2	5
1	2	3	5	6	7	4	9	8
2	7	6	4	9	5	8	1	3
5	8	1	7	2	3	9	6	4
9	3	4	8	1	6	2	5	7

अपना ब्लॉग — समझना किसी के लिए आसान नही

मुकुल श्रीवास्तव। डिप्रेशन से गुजरने वाला शख्स क्या महसूस करता है, ये समझना किसी के लिए आसान नहीं होता। इसलिए हमेशा अपनी मेंटल हेल्थ का ध्यान खुद रखना आधी लड़ाई जीतने जैसा होता है। बिली भी आज किसी से मिलती है तो सबसे पहले खुद से प्यार करने को कहती है। सेल्फ–लव। इसके लिए चाहे दवा लें या थेरपी, एक्सपर्ट की मदद या दोस्त की, फिजिकल एक्सरसाइज की या मेडिटेशन की, हवा बदलें या आसपास के लोग ही बदल डालें। जब तक आप खुद अपने लिए नहीं लड़ेंगे, इस लड़ाई में कोई आपका साथ नहीं देगा, कोई आर्ट भी नहीं।

ये सब आर्टिस्ट्स आज मंच पर खड़े होकर अपना दर्द कह रहे हैं, लेकिन इसका मतलब ये बिलकुल नहीं है कि अब ये सब खुश हैं। लिंकिन पार्क के लीड सिंगर चेस्टर बेनिंग्टन की डिप्रेशन से लड़ाई किसी से छिपी नहीं थी। उसके गानों भी इसी तरह चीखें होती थीं, जैसे मदद के लिए पुकार हो।